सोनभद्र में फ्लोराइड विषाक्तता

चर्चा में क्यों?

उत्तर प्रदेश के **सोनभद्र ज़िले** में फ्लोराइड प्रदुषण का अधिक स्तर पाया गया है, जिसके कारण लाखों लोगों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

मुख्य बिंदु

- **मुद्दे के बारे में:**
  - सोनभद्र ज़िले के 276 गाँवों की दो लाख से अधिक आबादी फ्लोराइड युक्त पानी पीने से प्रभावित है।
    - कोन, बभनी, म्योरपुर और दुद्धी ब्लॉक के गाँवों के भूजल में **फ्लोराइड का स्तर** निर्धारित मानक से **5-6 गुना से अधिक पाया गया** है।
  - **स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव:**
    - इसके चलते लोगों की **हड्डियाँ कमज़ोर और टेढ़ी हो रही हैं,** बच्चे जन्म से ही **दिव्यांग** पैदा हो रहे हैं और बड़ी संख्या में बुजुर्ग **चलने में असमर्थ** हो रहे हैं।
  - **NGT का आदेश:**
    - राष्ट्रीय हरित अधिकरण (National Green Tribunal - NGT) के आदेश के बावजूद लोग फ्लोराइड युक्त पानी पीने के लिये मज़बूर हैं।
    - स्थानीय प्रशासन और **संबंधित विभागों** द्वारा इसे प्रभावी रूप से लागू नहीं किया गया।

फ्लोराइड

- **परिचय:**
  - फ्लोराइड एक व्यापक रूप से पाया जाने वाला, **गैर-बायोडिग्रेडेबल** और दीर्घकालिक प्रभाव वाला प्रदूषक है। यह कोयले की ईंटों को जलाने से बनता है। फ्लोराइड **प्राकृतिक रूप से** खनिजों के साथ-साथ **मिट्टी, पानी और हवा में** भी पाया जाता है।
- **विषाक्तता:**
  - यह अत्यधिक **विषैला** होता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने पीने के जल में फ्लोराइड की ऊपरी सीमा 1.5 मिग्रा/लीटर की सिफारिश की है।
- **फ्लोराइड के प्रभाव:**
  - पर्याप्त मात्रा में सेवन किये जाने पर, **फ्लोराइड दाँतों की सड़न को रोकता है**, दाँतों के इनेमल के निर्माण में सहायता करता है और हड्डियों के खनिजीकरण में कमी को रोकता है।
  - **किंतु अधिक मात्रा में यह हड्डियों और जोड़ों पर नकारात्मक प्रभाव डालता है, साथ ही दाँतों में** फ्लोरोसिस **का कारण बनता है।**
  - फ्लोराइड प्रदूषण का वन्यजीवों पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/fluoride-poisoning-in-sonbhadra